Introduction

प्राक्कथन

******

कलाकार के कृतित्व में उसकी जीवन-दर्शन , मानसिक विकास तथा सामयिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब स्पष्ट लक्षित होता है, क्योंकि किसी भी कलाकार को सृजनात्मक प्रेरणा जीवन के विविध सोपानों तथा तत्संबंधी परिस्थितियों से ही प्राप्त होती है, जन्मजात सृजनात्मक प्रतिभा होते हुए भी उसे एक निश्चित रूप एवं दिशा देने के लिए कोई विशेष प्रेरणा-स्त्रोत अपेक्षित रहता ही है.

आधुनिक युग के वैतालिक एवं भारतीय संस्कृति के अनन्य प्रस्तोता मैथिलीशरण गुप्त की काव्य - प्रतिभा जन्मजात एवं काव्यगत संस्कार पैतृक देन थी. उस प्रतिभा तथा संस्कारों को साकार रूप तत्युगीन परिस्थितियों की उत्प्रेरणा द्वारा ही प्राप्त हुआ. जब गुप्तजी का कवि कोई निश्चित दिशा ढूँढ रहा था, उससमय विदेशी प्रभाव के कारण राष्ट्र की अतीतकालिन अत्यधिक दैदीप्यमान संस्कृति का उज्जवल प्रकाश क्रमशः क्षीण हो रहा था. राष्ट्र एवं उसकी उत्प्रेरक शक्ति संस्कृति का परम उपासक कवि अपनी आराध्य शक्ति की यह अवमानना सहन न कर सका. अतएव उसने उसकी बुझती लौ को पुनः प्रज्वलित करने का निश्चय किया और इस निश्चय पूर्ति का ज्वलंत प्रमाण हमारे समक्ष है कि कवि ने अपनी लगभग साठ वर्षों की अनवरत काव्य साधना द्वारा संस्कृति की ज्योति को बढ़ाया ही नहीं अपितु उसे वास्तविक रूप देने का भी स्तुत्य प्रयास किया है. साथ ही अपने अमूल्य काव्य-मणि-रत्नों द्वारा साहित्य-निधि में अपूर्व योगदान दिया है.

राष्ट्रकवि होने के नाते उनकी समदर्शी दृष्टि राष्ट्र के सभी अंगों पर समान रूप से पड़ी है. उनके काव्य का मूलादर्श एवं उद्देश्य लोकमंगल की भावना है. अपने व्यापक काव्य-क्षेत्र में प्राचीन और नवीन, पौराणिक और सामयिक, ऐतिहासिक और काल्पनिक, स्वदेश के और विदेश के सभी प्रकार के

2

काव्योचित विषयों को ग्रहण करते हुए गुप्तजी ने न तो कभी अपने युग को विस्मृत किया है और न काव्यादर्श को ही. यद्यपि हिन्दू संस्कृति से उन्हें अनन्य प्रेम है परन्तु सिक्ख, मुस्लिम, ईसाई आदि सभी संस्कृतियों का गौरव-गान उनकी विराट मानवतावादी दृष्टि का ही परिचायक है.

सन् 1901 से काव्यारम्भ कर सन् 1960 तक साठ वर्षों की सुदीर्घ कालावधि में उनकी अनेक मौलिक एवं अनुवादित रचनायें प्रकाशित हुई हैं. उनकी काव्य रचनाओं में महाकाव्य, खण्डकाव्य, आख्यान, मुक्तक, गीति-काव्य आदि सभी विधाओं का समावेश हुआ है. समन्वयवादी कलाकार होने के कारण नवीनता और प्राचीनता का अद्भुत सम्मिश्रण उनकी रचनाओं में दृष्टिगत होता है. ऐसे महान महाकवि की काव्य- कृतियों के प्रेरणा-स्त्रोत पर कार्य करने की मेरी इच्छा हुई. उनके जीवन और कृतित्व के विविध पक्षों पर शोधकार्य हुए हैं. किन्तु उनकी कविता के प्रेरणा-स्त्रोतों को लेकर अब तक कोई कार्य नहीं हुआ है. अतएव इस अछूते विषय पर शोधकार्य करके तदर्थ अभाव की पूर्ति करना ही हमारे इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य और लक्ष्य रहा है.

शोध प्रबंध का अपना एक विशेष क्षेत्र एवं परिधि होती है. इस दृष्टि से इस शोध-प्रबंध में मैथिलीशरण गुप्त की मौलिक काव्य-कृतियों के प्रेरणा-स्त्रोतों पर ही विशेष रूप से विचार किया गया है. इस शोध-प्रबंध को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है.

प्रथम अध्याय में गुप्तजी के जीवन एवं व्यक्तित्व की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित करते हुए युगीन परिस्थितियों की चर्चा प्रस्तुत की गई है. द्वितीय अध्याय में कवि की समस्त मौलिक कृतियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है, तत्पश्चात् विविध प्रेरणा- स्त्रोतों से प्रेरित रचनाओं का वर्गीकृत रूप से अलग-2 अध्यायों में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है.

3

तृतीय अध्याय में महाभारत तथा श्रीमद्भागवत के आख्यान एवं कथा प्रसंगों को लेकर लिखी जानेवाली कृतियों- जयद्रथ वध, सैरन्ध्री, वनवैभव, वक संहार, द्वापर, बहुला, हिडिम्बा, जयभारत, युद्ध - की विवेचना की गई है. इन कृतियों का वस्तुगत आधार स्पष्ट करते हुए इनकी आधुनिकता एवं मौलिकता पर विचार किया गया है. कवि का आधुनिकता संपन्न मानवतावादी दृष्टिकोण इन रचनाओं में विशेषरूप से उल्लेखनीय है. अभिव्यक्ति पक्ष में कृतियों की भाषा, संवाद योजना, रस योजना, बिम्ब-अलंकार-छन्द विधान की चर्चा की गई है. " द्वापर " में कवि ने युग सापेक्ष अनेक मौलिक उद्भावनाएँ की है. " बहुला " में आधुनिक मनोविज्ञान का सहारा लेकर कवि ने प्राचीन आख्यान को अभूतपूर्व उज्ज्वलता प्रदान की है. " जयभारत " गुप्तजी का चिरस्मरणीय प्रबंध काव्य है. इसमें सत् और असत्, भोग और त्याग, युद्ध और शांति, जीवन और जगत्, जीव और ईश्वर, धर्म और कर्म तथा ज्ञान-भक्ति का भावनाशील जीवन दर्शन के रूप में निरूपण हुआ है.

चतुर्थ अध्याय में रामकथा से प्रेरित कृतियों की विवेचना की गई है. " पंचवटी " में गुप्तजी ने राम-सीता की अपेक्षा लक्ष्मण के तपस्वी जीवन को अधिक महत्व दिया है. महाकाव्य " साकेत " में साधु भरत को नायक और उर्मिला को नायिका बनाकर तथा उनके जीवन-सूत्रों से कथातन्त्र का निर्माण कर कवि ने साहित्य के इतिहास में एक प्रवर्तन किया है. वैष्णव भक्त होने के कारण कवि अपने आराध्य की कथा को भी भुला नहीं पाया है. शताब्दियों से कलंकित महारानी कैकयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्रण करके उसे उज्ज्वलता प्रदान करने का स्तुत्य कार्य कवि ने किया है. युगीन चेतना के अनुरूप सीता के हाथों में सूत और तकली के साथ छुरपी और कुदाली भी गुप्तजी ने दे दी है. " साकेत " में मात्र साहित्यिक मौलिकता ही नहीं वरन् संपूर्ण जीवन दर्शन की एक क्रांतिकारी झलक देखने को मिलती है. " प्रदक्षिणा " कवि के रामकाव्य की प्रदक्षिणा है. इसका दो तिहाई अंश

4

" पंचवटी " और " साकेत " से लिया गया है और मात्र एक तिहाई अंश स्वतंत्र रूप से लिखा गया है. इन सभी कृतियों में युगचेतना और सांस्कृतिक मनोभावना का समन्वित रूप मिलता है. कवि गांधीवादी विचारधारा से गहरा प्रभावित है. उसका व्यावहारिक रूप इन कृतियों में दिखाई देता है.

पंचम अध्याय में विशुद्ध ऐतिहासिक कथानकों को लेकर लिखी जाने वाली कृतियों का अध्ययन किया गया है. " रंग में भंग " गुप्तजी की पुस्तकाकार प्रकाशित होनेवाली प्रथम रचना है. " विकट भट " तथा " रंग में भंग " दोनों ही कृतियाँ राजपूतों के शौर्यपूर्ण इतिहास से संबंधित है. इनमें कवि ने राजपूतों के दर्पपूर्ण कार्यों का उल्लेख किया है, जो आन पर जान देनेवाले थे. सिक्ख गुरुओं के शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान तथा उनकी मानवीय चारित्रिक विशेषताओं का ऐतिहासिक वर्णन " गुरुकुल " में किया गया है. " सिद्धराज " मध्यकाल के इतिहास प्रसिद्ध शूरवीर राजा सिद्धराज के जीवन वृत्त से सम्बद्ध है. " अर्जन और विसर्जन " में कवि ने अरब और सीरिया के ऐतिहासिक कथानक को लेकर राष्ट्रीयता देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना को विशेष महत्व दिया है. संक्षेप में कवि ने इन कृतियों में इतिहास के स्वर्णिम अध्यायों को युगीन चेतना के अनुरूप चित्रित किया है.

षष्ठ अध्याय में इतिहास प्रेरित- सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना प्रधान कृतियों- शकुन्तला, पत्रावली, यशोधरा, कुणालगीत, काबा और कर्बला , विष्णुप्रिया, रत्नावली- की विवेचना की गई है. " शकुन्तला " महाकवि कालिदास के " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " पर आधारित रचना है. " पत्रावली " सात ऐतिहासिक पत्रों का संकलन है. " यशोधरा " और " विष्णुप्रिया "- भगवान बुद्ध तथा महाप्रभु चैतन्य के गृहत्याग करने के बाद, उनकी पत्नीयों की मूक व्यथा को लेकर लिखी जाने वाली अनुपम कृतियाँ हैं. भारतीय नारी जीवन की गहन विवेचना इन रचनाओं में हुई है. सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल के जीवन की करुण कथा को लेकर " कुणाल गीत " लिखा गया है. " काबा और कर्बला " इस्लाम धर्म से संबंधित कृति है, किन्तु

5

सांप्रदायिक दृष्टि से मुक्त होकर लिखी गई है. " रत्नावली " महाकवि गोस्वामी तुलसीदासजी की पत्नी रत्नावली की वियोगव्यथा को लेकर लिखी गई है. नारी उत्थान और विकास के अनन्य समर्थक गुप्तजी के कवि ने इन उपेक्षिता नारियों का गौरवपूर्ण चित्रण करके उन्हें यथोचित स्थान प्रदान किया है ।

युगीन राष्ट्रीय चेतना तथा देश भक्ति से प्रेरित कृतियों का अध्ययन सप्तम अध्याय में किया गया है. " भारत-भारती " गुप्तजी को राष्ट्रकवि का गौरवपूर्ण स्थान दिलानेवाली एक अभूतपूर्व एवं अनूठी कृति है. ओजमयी भाषा एवं प्रभावोत्पादक शैली में इसकी रचना हुई है. " वैतालिक " एक जागरण- गीत के रूप में लिखी गई कृति है. " किसान " में शोषित, पीड़ित और दलितवर्ग के प्रतिनिधि के रूप में कृषक जीवन का बड़ा ही मार्मिक और मानवीय संवेदनापूर्ण चित्रण कवि ने किया है. " स्वदेश संगीत " युगीन राष्ट्रीय एवं देश भक्ति पूर्ण कविताओं का संकलन है. इसमें कवि का मातृभूमि प्रेम प्रकट हुआ है. सांप्रदायिक विद्वेष से क्षुब्ध होकर " हिन्दू " की गुप्तजी ने रचना की है. इसका आदर्श विशाल एवं सौहार्दपूर्ण है. " विश्व वेदना " में कवि ने विनाशकारी विश्व युद्ध के महानाश की वेदना को वाणी दी है. शोषण की मनोवृत्ति तथा फिजी की कुली-प्रथा को लेकर " अजित " की रचना की है. " भूमि-भाग " की कविताएँ विनोबा जी के भूदान आन्दोलन को लेकर लिखी गई है. " राजा-प्रजा " लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति करती है. युगीन राष्ट्रीय चेतना एवं गांधीवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव इन कृतियों पर है.

अष्टम अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया है. अ- भाग में मार्कण्डेय पुराण की शक्ति आख्यान को युगानुरूप प्रस्तुत करनेवाली रचना " शक्ति " की विवेचना की गई है. इसमें कवि ने संघशक्ति का महत्व प्रतिपादित किया है. ब- विभाग में निजी एवं पारिवारिक प्रेरणा-स्त्रोत से प्रेरित कृतियों - " झंकार ", " अंजलि और अर्घ्य ", " उच्छ्वास "

6

की विवेचना की गई है. " झंकार " आध्यात्मिक-रहस्यवादी-भक्तिपरक गीतों का संकलन है. " अंजलि और अर्घ्य " के द्वारा कवि ने राष्ट्रपिता गांधीजी के निधन पर अपनी आत्मांजलि एवं हृदय का अर्घ्य अर्पित किया है. " उच्छ्वास " कवि के निजी एवं पारिवारिक शोक प्रसंगों को लेकर लिखी जानेवाली प्रगीतात्मक कविताओं का संग्रह है. इनमें कवि के शोकविह्वल हृदय की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है. " मंगलघट " की विवेचना हमने पृथक से नहीं की है. क्योंकि उसकी प्राय: सभी कविताएँ-" रंग में भंग, "विकट भट, "स्वदेश- संगीत", " पत्रावली ", " झंकार ", " उच्छ्वास " आदि में संकलित हैं. " अब तो वे बासर बीत गए " यह अप्रकाशित प्रगीत है जो कवि के निजी एवं पारिवारिक जीवन से संबंधित है. इसका उल्लेख मात्र डा० कमलाकान्तजी पाठक की पुस्तक में प्राप्त होता है. किन्तु खेद है कि यह गीत पूर्ण रूप में हमें सब प्रकार के प्रयत्नों के बावजूद भी नहीं मिल सका.

उपसंहार में निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि गुप्तजी का काव्य-काल लगभग छ:दशकों तक व्यापक रूप से फैला हुआ है. इस विस्तृत एवं विशाल काव्य-विकास के मूल प्रेरणा स्त्रोतों का अध्ययन और विश्लेषण- विवेचन करना ही हमारे इस शोध-प्रबंध का लक्ष्य और उद्देश्य रहा है.

इस शोध प्रबंध को लिखते समय मैंने जिन- जिन विद्वानों की बहुमूल्य पुस्तकों से लाभ उठाया है, उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ. विशेष रूप से मैं श्रद्धेय डा० कमलाकान्तजी पाठक के प्रति हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने अपने पत्रव्यवहार द्वारा इस शोध प्रबंध की रूपरेखा को अंतिम रूप देने में मेरा मार्ग निर्देशन किया है. अतएव उनके प्रति मैं हृदय से अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ. मैं हिन्दी विभागाध्यक्ष पूज्य डा० मदनगोपालजी गुप्त के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस महत् कार्य को करने की प्रेरणा प्रदान की. मैं आदरणीया डा० प्रेमलता बाफ्ना के

7

प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ. जिनके निर्देशन में यह शोधकार्य संपन्न हुआ है, समय समय पर मुझे उनसे जो प्रोत्साहन, आत्मीयता एवं स्नेह प्राप्त हुआ है, वह वस्तुतः शब्दातीत है. उसे मैं केवल आत्मानुभूत करती हूँ. उनकी महती कृपा के बिना इस महार्णव को पार करना मेरे लिये किसी भी प्रकार संभव नहीं था. अंतमें महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ जिसने मुझे(अहिन्दी भाषी को)यह कार्य करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की.

इस शोध प्रबंध को मैंने यथासाध्य प्रामाणिक तथ्यों और आधारों की भूमिका पर रखकर परिपूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया है. फिरभी इसमें यत्र-तत्र त्रुटियाँ रह गई हों तो विद्वज्जन इसे मेरे अज्ञान का ही परिणाम मानें. एवमस्तु.

– ज्योत्सना कार्पेन्टर

-ज्योत्सना कार्पेन्टर